भारतीय नेपाली कथा-साहित्य में कोलकाता महानगर का प्रतिनिधित्व

डॉ. कविता लामा
संपर्क : 9832066182

कोलकाता पश्चिम बंगाल की राजधानी है। इसे भारत के वृहत महानगरों की बौद्धिक एवं सांस्कृतिक राजधानी के रूप में भी जाना जाता है। हुगली नदी के पूर्वी किनारे पर स्थित कलकत्ता को जनवरी, 2001 से कोलकाता नाम से जाना जाता है। पश्चिम बंगाल के रेनेसा के उद्गम स्थल के रूप में भी कोलकाता की विशिष्ट पहचान है। सन् 1947 में भारत की स्वाधीनता के पश्चात् कोलकाता को भारतीय आधुनिक शिक्षा, विज्ञान, संस्कृति, साहित्य, कला और राष्ट्रीय विचारधारा का केंद्र माना जाता है। पूर्वी और पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित होने के साथ-साथ कोलकाता सांस्कृतिक विविधता का मूल स्त्रोत है। विशिष्ट नाट्य परंपरा, कला, फिल्म, थियेटर और साहित्य के विकास में भी कोलकाता की अपनी समृद्ध परंपरा है। इस महानगर ने भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को जीवंत रूप में संरक्षित करने का कार्य किया है। विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक, कवि, लेखक, कलाकार, संगीतकार एवं फिल्म निर्देशकों के जन्म स्थल के रूप में भी कोलकाता की विशिष्ट ख्याति है। 19वीं और 20वीं शताब्दी में भारत के महान नायक राजाराम मोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, सन् 1913 में एशिया के साहित्य में पहले नोबेल पुरस्कार विजेता प्राप्त कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर, वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बोस, विश्व प्रसिद्ध फिल्म निर्माता तथा निर्देशक सत्यजीत रे, शांति नोबेल पुरस्कार से सम्मानित मदर टेरेसा, अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार प्राप्त अमर्त्य सेन आदि सभी विद्वानों को कोलकाता जैसे महानगर ने जन्म दिया है। सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक क्षेत्र में विशेष योगदान देकर इन विद्वानों ने भारत में कोलकाता को विश्व पटल पर विशिष्ट पहचान दिलाई है।

कोलकाता एक महानगर की परिधि तक सीमित न होकर पूर्वी भारत की सांस्कृतिक विरासत एवं शिक्षा का केंद्र है। 'सिटी ऑफ जोय' के नाम से पहचाना जाने वाला कोलकाता भारत का सांस्कृतिक केंद्र भी माना जाता है। बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक एवं बहुधार्मिकता से संपृक्त कोलकाता आज भारत के साथ-साथ विश्व में साहित्य, संगीत और संस्कृति के ज्ञानार्जन के लिए एक विस्तृत जगह उपलब्ध कराता है। यह महानगर समाज, साहित्य एवं संस्कृति के गहन अध्ययन एवं ज्ञान के क्षितिज के विस्तार के लिए भी सुप्रसिद्ध है। कोलकाता को साहित्य में रेखांकित करने अथवा साहित्य-लेखन से पूर्व यहाँ के जन-जीवन एवं शैली को समग्रता में समझना अत्यंत आवश्यक है। स्पष्ट है कि पुस्तकालय में उपलब्ध दो-चार पुस्तकों के अध्ययन मात्र से किसी भी समुदाय या वर्ग की जीवन शैली का पता नहीं चल सकता है। एक प्रकार से देखें

तो कोलकाता की विकसित एवं समृद्ध परंपरा से न सिर्फ भारतीय साहित्य अपितु नेपाली साहित्य भी काफी प्रभावित एवं प्रेरित है।

भारतीय नेपाली भाषा साहित्य और कोलकाता का संबंध

'भारतीय नेपाली साहित्य' का आशय उस साहित्य से है जो भारतीय नेपाली नागरिकों द्वारा बोली जाने वाली एवं भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में अंतर्निहित भाषा है। पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग और कलिङ्पोंग जिले, तराई-डुवर्स और उत्तर पूर्वी आठ राज्यों में से त्रिपुरा एवं अरुणाचल प्रदेश को छोड़कर सिक्किम, असम, मेघालय, मिजोरम एवं मणिपुर और पूर्वी उत्तर प्रदेश के बनारस और उत्तरांचल के भाग्सू एवं देहरादून में लिखे जाने वाले साहित्य को ही नेपाली साहित्य माना जाता है। उल्लिखित राज्यों में से वर्तमान में दार्जिलिंग, तराई-डुवर्स, सिक्किम, असम और मिजोरम आदि राज्यों में नेपाली साहित्य लेखन और साहित्यिक गतिविधियां सक्रिय रूप में देखने को मिलती हैं। देहरादून और बनारस के लेखकों द्वारा भी नेपाली साहित्य में कुछ काम हो रहा है।

कोलकाता से भारतीय नेपाली भाषा एवं साहित्य का ऐतिहासिक संबंध है। यह संबंध बहुत ही पुराना और नजदीक का है, विशेषकर दार्जिलिंग एवं तराई-डुवर्स से। प्राथमिक पाठशाला में नेपाली भाषा में अध्ययन-अध्यापन हेतु मान्यता सर्वप्रथम कोलकाता द्वारा ही प्रदान की गई, इससे नेपाली समुदाय के शैक्षिक और भाषिक विकास का संबंध है। जैसे- फोर्ट विलियम कॉलेज के फारसी भाषा के प्राध्यापक जे. ए. एटन द्वारा लिखित नेपाली भाषा का पहला व्याकरण A Grammar of Nepali Language का प्रकाशन सन् 1820 में कोलकाता से ही हुआ है। सन् 1916 में दार्जिलिंग के स्कूलों में नेपाली को द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाये जाने की अनुमति मिली। इसके बाद "हरिप्रसाद प्रधान, धरणीधर शर्मा और सूर्यविक्रम ज्ञवाली के लगातार प्रयास के बाद बंगाल सरकार ने 30 जुलाई, 1926 को एक सूचना जारी करके सभी सरकारी विभागों में 'नेपाली पहाडिया वा खस कुरा' के स्थान पर 'नेपाली' शब्द प्रयोग करने का आदेश दिया।" (प्रधान, 2010 दो.: 34) साथ में "सन् 1955 में भारत के नेपाली भाषियों को अपनी भाषा में प्रवेश परीक्षा देने की अनुमति प्रदान की और सन् 1961 में बंगाल सरकार द्वारा नेपाली भाषा को दार्जिलिंग के पर्वतीय अंचल में सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में मान्यता प्रदान की गई। इसके अलावा भारत के कुछ विश्वविद्यालयों में भी नेपाली भाषा को मान्यता देने के साथ-साथ नेपाली भाषा एवं साहित्य में 'ऑनर्स' के अध्ययन-अध्यापन का कार्य प्रारम्भ हुआ।" (नेपाली और विष्ट, 2017: 254) स्पष्ट है, प्रशासनिक और प्राज्ञिक दोनों क्षेत्रों में नेपाली भाषा के विकास में कोलकाता की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। बंगाल सरकार के अधीन सन् 1977 में स्थापित उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय के नेपाली विभाग में सबसे पहले स्नातकोत्तर और बाद में एम. फिल. एवं पीएच. डी. के अध्ययन-अध्यापन के सुचारु संचालन कार्य को भी भारतीय नेपाली भाषा के विकास में एक और उपलब्धि के रूप में देखा जा सकता है। कोलकाता

दार्जिलिंग और सिक्किम के लोगों के लिए भी उच्च शिक्षा अर्जित करने का केंद्र बना, इस बात से यह पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है कि कलकत्ता का नेपाली समाज के साथ संबंध का दायरा सीमित न होकर अत्यंत सुदृढ़ एवं विस्तृत है। स्पष्ट है, जो लोग पढ़ने, काम करने एवं घूमने के मकसद से कोलकाता आए हुए थे, उन्होंने ही कोलकाता को देखकर नेपाली साहित्य लेखन का कार्य किया है। इनकी रचनाशीलता से गुजरते हुए हमें इनकी रचनाओं में उक्त संदर्भों का पुख़्ता प्रमाण मिल जाता है।

भारतीय नेपाली कथा-साहित्य में कोलकाता का चित्रण

भारतीय नेपाली साहित्य में कोलकाता महानगर के प्रसंग के आने का मतलब बंगाल की मिट्टी की गंध, महल से लेकर झुग्गी-झोपड़ी में रह रहे आम आदमी के वास्तविक जीवन, यहाँ के परिवेश में उपस्थित पात्रों के द्वारा हरेक कोने, गली, गाँव और शहर के लोगों के जीवन-दर्शन, मूल्य एवं मान्यता आदि को विस्तृत रूप में समझने से है। दूसरे शब्दों में कहें तो कोलकाता महानगर के आम जन-जीवन से जुड़े गंभीर प्रश्नों तथा उनके जीवन के सर्वांगीण पहलुओं को वृहत्तर फ़लक पर रेखांकित करने से है। भारतीय नेपाली साहित्य में कोलकाता के सही प्रतिनिधित्व होने का अर्थ केवल वाह्य सौंदर्य का वर्णन करना ही महत्त्वपूर्ण नहीं बल्कि इसकी आंतरिक कुरूपता को चिन्हित करना भी है, भारतीय नेपाली साहित्य इस बात का निर्वहन करने में पूर्णतया सफल रहा है। प्रेम-प्रणय का संदर्भ, कारागार का जनजीवन, वैश्यालय में महिलाओं की दयनीय स्थिति, फिल्म इंडस्ट्री में हो रहे स्त्री शोषण, स्त्री जीवन के मनोविज्ञान आदि अनेक संदर्भ भारतीय नेपाली साहित्य में प्रमुखता से उभरकर आए हैं। यहाँ के साहित्य में कोलकाता का यथार्थपरक एवं मनोवैज्ञानिक चित्रण पूरी जीवंतता के साथ हुआ है। कोलकाता की इसी बाहरी एवं भीतरी कुरूपता, विसंगतिपूर्ण स्थिति एवं कोलकाता में बसे हुए नेपाली जनजीवन का अन्वेषण करते हुए इन दोनों पक्षों को समान रूप से नेपाली कथाकारों ने अपने साहित्य में ईमानदारीपूर्वक दर्ज किया है।

भारतीय नेपाली भाषी समाज के लिए कोलकाता साहित्य एवं संस्कृति का केंद्र रहा है। सन् 1936 में रूपनारायण सिंह द्वारा नेपाली भाषा में लिखित पहला उपन्यास 'भ्रमर' इसका ठोस प्रमाण है। प्रेम प्रणय के प्रसंग पर केंद्रित यह उपन्यास कोलकाता की पृष्ठभूमि पर आधारित है। नेपाली साहित्य में आधुनिक युग की शुरुआत का पहला श्रेय भी इसी उपन्यास को जाता है। इस उपन्यास में कोलकाता के परिवेश का सजीव चित्रण मूल रूप में होने का कारण यह है कि रूपनारायण सिंह की उच्च शिक्षा कोलकाता के ही विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों से हुई है। सन् 1926 में स्कटिस चर्च कॉलेज से उन्होंने आई. ए. प्रथम श्रेणी, सन् 1928 में सेंट जेभियर कॉलेज से डिंस्टिंगसन सहित बी. ए. और कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी. एल. की डिग्री हासिल की। विद्यार्थी जीवन से ही साहित्यिक रुचि, अङ्ग्रेज़ी एवं बांग्ला भाषा का ज्ञान होने के कारण उन्होंने दोनों भाषाओं की पुस्तकों का गंभीर अध्ययन किया है। बांग्ला साहित्य के बंकिमचंद्र चटर्जी एवं शरतचंद्र के साहित्य से प्रभावित होने के कारण उनके साहित्य में घटनाओं का यथार्थ चित्रण देखने को

मिलता है। रूपनारायण सिंह का मंतव्य है : "कोलकाता विश्वविद्यालय में बी. एल. की पढ़ाई के दौरान ही नेपाली भाषा में एक सामाजिक उपन्यास लिखने की इच्छा हुई।" (सिंह, 1936: 5), 'भ्रमर' उपन्यास को उक्त संदर्भ में जीवंत उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। किसी भी रचनाकार का अपने देशकाल एवं परिवेश से गहरा जुड़ाव होता है। हम उसे उसके समय एवं समाज से अलग करके पारिभाषित नहीं कर सकते हैं। रूपनारायण सिंह कोलकाता के परिवेश में इतने रच-बस गए हैं कि उनके उपन्यास 'भ्रमर' में यहाँ की संस्कृति एवं समाज का सजीव चित्रण होना, अत्यन्त सहज एवं स्वाभाविक है।

भिन्न-भिन्न खंडों और उपशीर्षकों में विभक्त इस उपन्यास में लेखक द्वारा न सिर्फ कोलकाता बल्कि दार्जिलिंग, बनारस तथा बर्मा के रंगून के परिवेश का भी चित्रण किया गया है। लेकिन इस उपन्यास के पात्र और कथावस्तु कोलकाता के परिवेश में ही परिक्रमा करते हुए दिखाई देते हैं। प्रथम खंड के अध्याय-2 **'मायाको मोहभंग'** की पहली पंक्ति "इन्द्रशेखर कोलकाता में एम. ए. कर रहा है।" उद्धरण से उक्त संदर्भ की पुष्टि हो जाती है। इसी महानगर में अध्ययन के दौरान ही शेखर को माया नाम की एक लड़की से प्रेम हो जाता है लेकिन दोनों का प्रेम सफल नहीं हो पाता और संबंध विच्छेद हो जाता है। यह पूरी घटना कोलकाता महानगर में ही घटित हुई। अध्याय-7 **'शेखर का आँखा उघ्रन्छन्'** शीर्षक के अंतर्गत लेखक ने दिखाया है कि शेखर का दार्जिलिंग में वीणा नाम की दूसरी लड़की से प्रेम हो जाता है। दार्जिलिंग से लौटने के पश्चात् वह कलकत्ता के 87, कॉलेज स्ट्रीट से वीणा के लिए प्रेम पत्र लिखता है। शेखर द्वारा पत्र को पोस्ट किए जाने के समय लेखक ने कलकता का वर्णन इस प्रकार किया है : "साँझ हो गई है। बाहर हरिसन रोड में ट्राम, घोड़ागाड़ी, मोटर और रिक्शे की आवाज से कोलाहल मची हुई है, और फिर आगे कॉलेज स्ट्रीट में भी काफी शोरगुल और बहुत भीड़-भाड़ है। हरिसन रोड और कॉलेज स्ट्रीट के दोनों रास्तों में अनेक स्त्री-पुरुष खड़े दिखाई दे रहे हैं। कोई ट्राम की प्रतीक्षा में है तो कोई टैक्सी वाले को आवाज दे रहा है। कॉलेज के छात्र, अध्यापक, ऑफिस के किरानी, पुलिस, कोर्ट के वकील, बड़े बाजार का व्यापारी, पॉकेटमार, गुंडा, दरबान एवं समाज के प्रत्येक श्रेणी के मनुष्य वहाँ दिख रहे हैं लेकिन सभी अपने-अपने काम में व्यस्त हैं।" (पृ. 40) लेखक ने अपने इस उपन्यास में कलकत्ता के एक व्यस्त जनजीवन का चित्रण किया है। इसी व्यस्तता के बीच एक लड़का खुद को बस से बचाता हुआ सड़क पार करते समय टकराकर घोड़ागाड़ी के नीचे आने से दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है। कलकत्ता की गली-गली में दिन प्रतिदिन इस तरह की सामान्य घटनाएँ घटती रहती हैं, इस पर विचार करते हुए कॉलेज स्ट्रीट के हॉस्टल के कमरे के आगे खड़े होकर शेखर इन सभी दृश्यों को देख रहा था।

उपन्यास की प्रमुख नारी पात्र वीणा का पत्र पाने के बाद विचलित होकर शेखर अपने मन को स्थिर करने के लिए कॉलेज स्ट्रीट की तरफ चला गया। तत्कालीन समय का एक और दृश्य इस प्रकार चित्रित है- "अलबर्ट हल के आगे लोगों की भीड़ को देखकर वह भीतर चला गया। स्वामी सदानंद का व्याख्यान

कलकत्ता में हो रहा था। वेदांत के शिक्षा प्रचार के निमित्त स्वामी सदानंद भारत के विभिन्न शहरों में जाकर व्याख्यान करते थे।" (पृ. 43) स्वामी जी का यह व्याख्यान 'प्रेम' पर केंद्रित था। शेखर का मन इस व्याख्यान को सुनकर स्थिर हो गया। कारण यह कि इसके पहले वह प्रेम के सही अर्थ एवं मायने से पूर्णतया अनभिज्ञ था, उसके लिए प्रेम की परिभाषा बिल्कुल अलग थी। स्वामी जी के व्याख्यान से प्रेम के सही अर्थ एवं महत्त्व को समझने के बाद शेखर की सोच एवं उसका जीवन पूरी तरह परिवर्तित हो जाता है। तृतीय खंड-1 'जहाजमा' के अंतर्गत हुगली से रंगून जाने का प्रसंग चित्रित हुआ है। कलकत्ता के सबसे पुराने बन्दरगाह की अपनी विशिष्ट पहचान है। इस बन्दरगाह की गतिविधियों का चित्रण कुछ इस प्रकार है- "अरणकोला जहाज हुगली नदी के 'उटरम' घाट छोड़कर समुद्राभिमुख हुआ। जहाज रंगून जाने वाला है। ऊपर 'डेक' में अनेक प्रकार के यात्री हैं जैसे- व्यापारी, कुली और चीनियाँ आदि। यह सब निम्न श्रेणी के पैसेंजर हैं। इनके बीच की खाली जगह में डेक का तख़्त और खुले आकाश उसकी छत है।" (पृ. 67) हुगली नदी में अवस्थित यह बन्दरगाह कलकत्ता का एक मुख्य आकर्षण है जो 'भ्रमर' उपन्यास के अध्याय-एक में चित्रित है।

कालीघाट का मंदिर धार्मिक और ऐतिहासिक दृष्टि से कलकत्ता का दूसरा महत्त्वपूर्ण स्थल है। कलकत्तावासियों की इस मंदिर के प्रति गहरी आस्था है। *'भ्रमर'* उपन्यास के पात्र शेखर की माँ मैना देवी और प्रेमिका वीणा भी इसी आस्था से इस मंदिर की शरण में आई हैं। चतुर्थ खंड के अध्याय एक 'कालीघाटको मंदिरमा' में एक नेपाली परिवार कलकत्ता के उत्तर प्रांत श्याम बाजार में भाड़े के मकान में रह रहा है। बहुत दिनों से अस्वस्थ मैना देवी काली माँ को भोग देने का वचन दी हुई थी। मंदिर के प्रति मैना देवी की आस्था का वर्णन लेखक ने इस प्रकार किया है: "कालीघाट के मंदिर में देवी की प्रतिमा के आगे मैना देवी बहुत देर तक नतमस्तक रही। दोनों हाथ में लाल रंग का फूल है, आँख से आँसू झलक रहे हैं। मातृ हृदय का करुण क्रंदन देवी माँ के आगे ज्ञापित कर रही है।" (पृ. 100)

दार्जिलिंगवासी नेपालियों के लिए कलकत्ता उस समय से ही शिक्षा का केंद्र रहा है। प्रस्तुत उपन्यास के अधिकांश पात्र इसी उद्देश्य के निमित्त कलकत्ता आए। शेखर और माया के साथ-साथ अन्य पात्र के रूप में वीणा भी शिक्षा अर्जित करने के लिए कलकत्ता आई। शेखर के प्रेम में धोखा खाई हुई माया कलकत्ता छोड़कर बनारस जाने के बाद मेडिकल की पढ़ाई के लिए पुनः कलकत्ता वापस आ गई। शेखर का दोस्त मोहन भी कलकत्ता से विधि की पढ़ाई कर रहा है। गौरतलब है, कलकत्ता में लोगों के रहने का मूल उद्देश्य विधि, मेडिकल, एम. ए आदि की शैक्षणिक डिग्री एवं उपाधि प्राप्त करना ही रहा है। इसके अलावा खिदिरपुर में विजया नाम की लड़की पर गुंडों का आक्रमण होना, शेखर को चोट लगना, अस्पताल पहुँचना जैसी कोलकाता महानगर में घटित तमाम वास्तविक घटनाएँ इस उपन्यास में प्रमुखता के साथ चित्रित हुई हैं।

'भ्रमर' उपन्यास के अतिरिक्त रूपनारायण सिंह का नौवें कथा-संग्रह 'कथा नवरत्न' में दार्जिलिंग के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक जीवन के विभिन्न पक्षों को लेकर कहानियाँ संकलित हैं। इसी संग्रह में संकलित 'धनमती का सिनेमा स्वप्न' एक ऐसी कहानी है जिसमें धनमती दार्जिलिंग नेपाली समाज की एक अशिक्षित एवं आर्थिक रूप से कमजोर परंतु जीवन में बड़ा नाम कमाने और सिनेमा की हीरोइन बनने की महत्त्वाकांक्षा रखती है। यह कहानी धनमती के जीवन के उतार-चढ़ाव को चित्रित करती है। दार्जिलिंग में माँ के साथ एक छोटी सी चाय की दुकान चलाकर अपना जीवन निर्वाह करने वाली धनमती का सपना सिनेमा की हीरोइन बनने का है। दुकान में एक दिन चाय पीने के लिए आए हुए सुंदरलाल से धनमती की मुलाकात हो जाती है। जब उसे यह पता चलता है कि धनमती अपनी सुन्दरता से आत्ममुग्ध होकर रात-दिन हिरोइन बनने का सपना देख रही है तो सुन्दरलाल उसकी अज्ञानता का फायदा उठाकर धनमती को हिरोइन बनने के लिए उकसाता है और धनमती उसकी बातों को सच समझकर मालती देवी बनने का सपना देखने लगती है। एक दिन दार्जिलिंग के किसी होटल में कलकत्ता से आए हुए फिल्म निर्माता सुरेन बाबू से सुंदरलाल ने धनमती की मुलाक़ात कराई। इसके बाद धनमती ने महसूस किया कि उसका सपना हकीकत में बदलने जा रहा है। सुंदरलाल के साथ वह हीरोइन बनने के लिए कलकत्ता जाने को राजी हो जाती है जिस का वर्णन इस प्रकार है: "उल्लू के आवाज देने के कुछ महीने बाद कलकत्ता के सियालदह स्टेशन में बंगाली सुंदरलाल और मालती देवी रेल से उतरते हैं।

सुरेन बाबू की मोटर बाहर खड़ी थी। सुंदरलाल ड्राइवर के साथ आगे बैठ गया, बंगाली और धनमती पीछे बैठ गए। मोटर कलकत्ता के दक्षिणी दिशा की ओर बढ़ गई। मोटर में पीछे बैठे हुए बंगाली ने धनमती के बाएँ कंधे पर हाथ रखते हुए नाटकीय अंदाज में कहा "स्वागतम प्रिय !" कलकत्ता महानगर तुम्हारा स्वागत करता है। अब सरोज फिल्म इंडस्ट्री तुम्हारे जैसे कलाकार को पाकर धन्य हो जाएगा।" (पृ.81)

महिलाओं के प्रति कुदृष्टि रखने वाला सुरेन बाबू के साथ वह कलकत्ता के तीन मंजिले मकान में दो दिन तक रही। मेट्रो सिनेमा बंगालियों का मुख्य थिएटर है। टलीवुड में न्यू थिएटर को देखने के पश्चात् धनमती के मन में यह विश्वास जगने लगा कि उसे थिएटर में ले लिया जाएगा लेकिन कलकत्ता में तीन महीने बीत जाने के बाद अभी तक उसके सपने पूरे होने के कोई आसार नहीं दिख रहे थे। इसके बाद शीला देवी जो पहले से फिल्म उद्योग से जुड़ी हुई सिनेमा की हिरोइन थी, उसने धनमती को समझाते हुए कहा कि उसके जैसी अशिक्षित लड़कियों के लिए कभी भी फिल्म की हीरोइन बनना संभव नहीं है साथ ही उसे अपने घर दार्जिलिङ लौट जाने की भी सलाह दी। सुंदरलाल और सुरेन बाबू उसका केवल शारीरिक शोषण ही कर रहे हैं। शीला द्वारा इस प्रकार की सही जानकारी देने के बाद भी धनमती का दिमाग नहीं खुलता है। परिणामस्वरूप बिना विवाह किए ही वह एक बच्ची की माँ बन जाती है। कलकत्ता की गलियों में तमाम

ठोकर खाने के बावजूद अंत में एक बेटी को कोख में लेकर वह दार्जिलिंग आ जाती है। फिर माँ की उसी चाय की दुकान में काम करते हुए वह अब अपनी बच्ची को सिनेमा की हीरोइन बनाने के सपने बुनने लगती है।

भारतीय नेपाली साहित्य में नाटककार के रूप में ख्याति प्राप्त सिक्किम प्रदेश के ध्रुवकुमार लोहागण का 'रजनीगंधा' अत्यंत चर्चित कथा-संग्रहों में से एक है। इस कहानी की मुख्य पात्र रजनी है। कहानी में अन्य पात्र के रूप में रोशन कलकत्ता के सेंट जेभियर कॉलेज में बी. ए. तृतीय वर्ष का छात्र है। कहानी में लेखक ने कथा का आरंभ एस्प्लानेड रोड की एक शाम के मनमोहक एवं सुंदर दृश्य से किया है, जिसकी सड़कों पर घूमते हुए लोगों को स्वर्ग की अनुभूति होती है, रजनी और रोशन भी इसी रमणीय शाम एवं कलकत्ता की भीड़ का एक अभिन्न हिस्सा हैं। एक दिन शाम के समय वह डलहौजी से पैदल चलते हुए एस्प्लानेड पहुँच जाती है। ग्रैंड होटल के सामने खड़े रोशन की दृष्टि जब रजनी पर पड़ती है तो वह उसके प्रति इतना आकर्षित हो जाता है कि ईडेन गार्डन की दूसरी मुलाक़ात में ही वह रजनी को प्रपोज कर देता है। लेकिन रजनी उसके प्रेम प्रस्ताव को अस्वीकार कर देती है। रजनी का हीरोइन बनने का सपना ही उसे कलकत्ता आने के लिए प्रेरित करता है। हीरोइन बनने का सपना बुन रही रजनी की नज़र एक दिन अखबार के एक विज्ञापन पर पड़ जाती है। पत्रिका में दिए गए विज्ञापन वाले स्क्रीनटेस्ट में रजनी को सफलता मिलती है। कलकत्ता में आउटडोर शूटिंग के लिए आई हुई रजनी के साथ एक बड़ी घटना घटती है। यहाँ उसे कोल्डड्रिंक में कुछ मिलाकर बेहोश कर दिया जाता है। नींद खुलने के बाद उसे यह पता चलता है कि वह कोलकाता के सोनागाछी वैश्यालय में है। रोशन को जब रजनी इस घटना के बारे में बताती है तो वह उसे वहां से निकलने का आग्रह करता है, लेकिन रजनी उसके इस प्रस्ताव को ठुकराते हुए इसी पेशे में से जुड़कर काम करने की बात पर अड़ जाती है। लेखक ने इस कहानी के माध्यम से समाज में रह रहे छद्म चरित्र एवं महिलाओं के साथ हो रहे छल तथा बर्बर प्रसंग को प्रमुखता के साथ उद्घाटित किया है।

शादी के नाम पर झाँसा देकर लड़कियों को बेच देना और उसे देह-व्यापार जैसी वृत्तियों में झोंक देने की घटनाएँ हमारे समाज में आए दिन घटती रहती हैं। वीमेन ट्रैफिकिंग जैसे मुद्दों को लेकर भारतीय नेपाली साहित्य में कई कहानियां लिखी गई हैं। समकालीन कहानीकार प्रकाश हांखिम की कहानी 'आमी तुमाके भालो बासी' इसी पृष्ठभूमि पर केन्द्रित है। इस संग्रह के अंतर्गत संकलित 'सुनपसीना' (2012) कहानी में लेखक ने एक खेती-किसानी कर रहे गरीब घर की लड़की के जीवन एवं उसके संघर्ष को दिखाया है। इस कहानी की मुख्य पात्र सरला है। उसे पढ़ने लिखने में कोई दिलचस्पी नहीं है। उसे अपने सौंदर्य के प्रति घमंड है। मोबाइल मिलने के बाद सोशल मीडिया के माध्यम से विशाल नाम के एक लड़के से उसकी बातचीत शुरू हो जाती है। विशाल सरला से शादी करके उसे कोलकाता के सोनागाछी में ले जाकर बेच देता है। कलकत्ता के सोनागाछी में मनोविनोद नाम के एक लड़के से सरला की मुलाक़ात होती है। सरला के साथ

हुई घटना से दुखी होकर मनोविनोद पुलिस का सहारा लेकर सरला के पिता को वहाँ बुलाकर उसको वहाँ बचा लेता है। सरला मनोविनोद को 'आमी तुमाके भालो बासी' कहते हुए वहाँ से चली जाती है। लेखक ने इस कथा के जरिए वर्तमान परिवेश में महिलाओं के साथ हो रहे अन्याय, छल-छद्म, शादी के नाम पर यौन-शोषण एवं देह व्यापार जैसी निंदनीय घटनाओं को दिखाने का प्रयास किया है।

अच्छा राई 'रसिक' भारतीय नेपाली कथा साहित्य में एक विशिष्ट हस्ताक्षर के रूप में शुमार किए जाते हैं। 'पूर्णिमा की रात' कहानी से साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण करने वाले 'रसिक' का निबन्ध विधा में बहुत सार्थक एवं महत्त्वपूर्ण हस्तक्षेप रहा है। रसिक द्वारा सन् 1955 में लिखा गया 'लगन' उपन्यास एक सामाजिक उपन्यास के रूप में चर्चित है। 20 परिच्छेदों में विभाजित इस उपन्यास के 11वें परिच्छेद में कलकत्ता महानगर की सामाजिक पृष्ठभूमि को चित्रित किया गया है। कलकत्ता घूमने और देखने की उत्कट इच्छा से दार्जिलिङ से पहली बार कलकत्ता आए हुए कृष्णचन्द्र ट्राम से उतरते ही चौड़ी सड़कों को देखकर आश्चर्यचकित हो जाता है। मित्र की बहन सुभद्रा से मिलने आए वह रास्ते में कुछ लड़कों को आते देखकर नेपाली में पूछते हैं- "महाशय, यहाँ साइकल दोकान कहाँ छ?" (पृ.106) वास्तव में वह वहाँ एक "गुरुङ साइकल दोकान" को ढूँढ़ रहे थे। नाम से यह स्पष्ट हो जाता है कि दार्जिलिङ के नेपाली समुदाय के लोगों का कलकत्ता में न सिर्फ आना-जाना है बल्कि वह यहाँ छोटे-मोटे व्यवसाय में भी संलग्न हैं। कलकत्ता जैसी भीषण गर्मी में भी उन्हें पारंपरिक वेषभूषा दौरा सुरुवाल पहनकर चलते देख लोग अचंभित हो जाते हैं। दार्जिलिङ से आई हुई सीधी-साधी लड़की सुभद्रा के रूप-रंग एवं हाव-भाव में हुए बड़े परिवर्तन को देखकर कृष्णचन्द्र चौंक गया। सुभद्रा पूरी तरह से कलकत्ता के रंग में रंग गई थी, जो उसे बिल्कुल पसंद नहीं आया। कृष्णचन्द्र के पूछने पर उसे यह पता चला कि कलकत्ता में गठित नेपाली साहित्यिक संस्थाएं नाटक, कविता, कथा-गोष्ठी के आयोजन करने के अलावा अपने लोगों के सुख-दुःख में भी सहयोग करती हैं। निश्चित रूप से इससे नेपाली समाज की सक्रिय गतिविधि के बारे में पता चलता है। उपन्यास की पृष्ठभूमि कोलकाता होने के कारण इसमें कई जगहों पर बङ्गला और हिन्दी भाषा का भी प्रयोग किया गया है।

रूपनारायण सिंह की लेखन प्रवृत्ति से प्रभावित भारतीय नेपाली साहित्य में दूसरे कथाकार कृष्णसिंह मोक्तान हैं, जिन्होंने सन् 1949 में अपनी पहली कहानी 'गरीबको आँसु' के माध्यम से साहित्यिक यात्रा की शुरुआत की। मोक्तान ने रामकृष्ण वेदांत आश्रम से अपनी औपचारिक शिक्षा ग्रहण करके सन् 1954 में विश्व भारती शांति निकेतन से समाज विज्ञान में डिप्लोमा और कलकत्ता विश्वविद्यालय से राजनीतिशास्त्र से एम. ए. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया। कोलकाता में कुछ दिनों तक पुलिस विभाग में नौकरी करते हुए उन्होंने कलकत्ता के जन-जीवन को बहुत ही नजदीक से महसूस किया। प्रेसीडेंसी कारागार में जेलर के रूप में कार्य करते हुए इन्होंने वहाँ के कैदियों जैसे सुल्तान अली, मदन, निर्मल सेन और अशोक आदि से मुलाक़ात की और इनके जीवन की कथा को अपने उपन्यास 'जीवन परिक्रमा' (1964) में दर्ज

किया। संस्मरणात्मक शैली में लिखा गया यह उपन्यास विषय के स्तर पर अन्य नेपाली भाषा के उपन्यासों की तुलना में पूर्णतया भिन्न है। जेल विभाग में कार्य करने के दौरान इन्होंने बंदियों के जीवनानुभव, अपराधियों की मनोवृत्ति एवं चरित्रों की वास्तविक घटना का विश्लेषण अपने इस उपन्यास में किया है। कारागार के सुपर्यवेक्षक की भूमिका में प्रमुख पात्र चंद्रशेखर है। वह कलकत्ता की यूनिक कॉलोनी में किराए का मकान लेकर अपनी पत्नी सरस्वती देवी के साथ रह रहा है। उसने अपनी श्रीमती को कारागार के विभिन्न कैदियों की कथा सुनाई है। चंद्रशेखर नौकरी के सिलसिले में जलपाईगुड़ी से कलकत्ता आया जहां उसकी मुलाक़ात धर्मराज धिताल के साथ चतुरमान सुब्बा जैसे आर्थिक रूप से विपन्न व्यक्ति के साथ हुई। उपन्यास के दूसरे परिच्छेद में कलकत्ता जैसे महानगर के व्यस्ततम जीवन में प्रत्येक कार्य के लिए पंक्ति में लगना पड़ता है। जीवन निर्वाह के लिए चन्दन नगर से चलकर कलकत्ता में नौकरी करने वाले सुबोध बाबू, बनगाँव से कलकत्ता आने वाले गोपाल बाबू के रात-दिन की रेल-बस यात्रा का वर्णन इस उपन्यास में अत्यंत यथार्थपरक ढंग से हुआ है। सन् 2003 में प्रकाशित 'जीवन गोरेटो' उपन्यास को सन् 2006 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया। इस उपन्यास का पूर्वाधार ' *जीवन-परिक्रमा* ' उपन्यास है। इस उपन्यास में चित्रित पृष्ठभूमि भी कलकत्ता के नगरीय जीवन और उसके आस-पास का रहा है। उपन्यास में चित्रित मिस्टर नटवरलाल, चारू मजूमदार, प्रमोद दास गुप्त और नाटा मल्लिक जैसे चर्चित बंदियों के जीवन-दर्शन का विस्तृत वर्णन किया गया है। अपराध जगत को लेकर नेपाली साहित्य में बहुत कम लिखा गया है। उपन्यास के संदर्भ में कृष्णसिंह मोक्तान का मंतव्य है : "जीवन के लंबे, घुमावदार, असभ्य, चमकदार एवं विषमताओं से भरे रास्ते में मिले हुए विचित्र, असामान्य, रोमांचक, देखने में साधारण परंतु भीतर से नृशंस हत्यारा-हत्यारिन, कुरूप और खुरदुरे आवरण के भीतर छिपी हुई सुन्दर प्रतिभा और कीचड़ के बीच खिले कमल के फूलों का चरित्र-चित्रण एवं उनके अद्भुत आख्यानों को इस ग्रंथ में लिपिबद्ध किया गया है।" (पृ.111)

सन् 1967 में कविता विधा से साहित्य में प्रवेश करने वाली विंद्या सुब्बा ने नेपाली साहित्य में अब तक 17 रचनाएँ लिखी हैं। नेपाली कथा-साहित्य में अपनी विशिष्ट छाप छोड़ने वाली विंद्या सुब्बा द्वारा सन् 1999 में लिखे गए उपन्यास 'अथाह' को सन् 2003 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से विभूषित किया गया है। भारतीय कथा-साहित्य में अपना उच्च स्थान बनाने में सफल विंद्या सुब्बा ने कविता, यात्रा-वृत्तान्त और आलोचना विधा में अपनी कलम चलाई है। यह उपन्यास कलकत्ता के मानसिक रोगियों के विभिन्न कथा पर आधारित है। कथा की प्रमुख पात्र प्रीति सुबोध बाबू की बेटी है, उपन्यासकार स्वयं प्रमुख पात्र के रूप में नर्सिंग शिक्षा में डिग्री हासिल करके कुछ महीनों के लिए कलकत्ता के मानसिक चिकित्सालय में रोगियों के उपचार एवं सेवा के लिए तत्पर हो जाता है। प्रथम पुरुष दृष्टिकोण में लिखे गए इस उपन्यास में महानगर के उस मानसिक अस्पताल का चित्रण इस प्रकार से किया है- "पूरा अस्पताल चारों और से सीमेंट की सलाखों से घिरा हुआ था, सबसे बाहरी लोहे का मूलद्वार और फिर उसी द्वार के माध्यम से प्रवेश करने के बाद, स्त्री-

पुरुष भाग को लोहे की दो रेलिंग दरवाजों से अलग कर दिया गया था। बहुत चौड़ा, बरामदे से पहले हरे रंग की दूब का एक पुरुष भाग और उससे भी छोटे आँगन में पीपल के पेड़ के साथ स्त्री भाग।"(पृ.6) इस विवरण से स्पष्ट होता है कि अस्पताल में रोगियों के लिए अच्छी एवं अनुशासित व्यवस्था है। विभिन्न संप्रदायों और जातियों से विवाहित, कुछ अविवाहित, कुछ सफ़ेद बालों के साथ, कुछ बुजुर्ग विशेषतः मानसिक रूप से बीमार महिलाओं में, दार्जिलिंग की तकभर कमान में रहने वाली माया एक समय में आकर ठहर गई है। वह अभी भी अपनी उम्र 35 साल बताती है, जिसको अपने ही भाइयों ने इस अस्पताल में छोड़ दिया है। कोलकाता के विभिन्न जगहों और विभिन्न कारणों से आए मानसिक रोगियों का इलाज अभी भी इस अस्पताल में चल रहा है उनमें से बीस वर्ष की प्रीति, चौबीस वर्ष की अपराजिता, संध्या, जिता, शशि, छब्बीस-सत्ताईस साल की गंगा, अठारह-उन्नीस साल की अस्मिता आदि शामिल हैं जो विवशता, विश्रृङ्खलित मन और गतिविधियों में अपना जीवन-यापन कर रहे हैं। इन सबका चित्रण सुब्बा ने अपने इस उपन्यास में किया है। कोलकाता के बस यात्रा में दिखने वाला कष्ट, पति के साथ बिताया हुआ पल, शीतकाल के बाद गर्मी में कृष्णचुड़ा और पलास के वृक्ष को देखकर दार्जिलिंग में खिलने वाला चाँप और गुराँस की याद और शाम के समय कोलकाता के दृश्य का अत्यंत मनोहर वर्णन उपन्यास में मिलता है- "सूर्यास्त के बाद धुंधलके में, हरी घास के मैदान अधिक आकर्षक हो गए हैं। लोग पेड़ों के नीचे बैठकर बातें करते हैं और फिर एक-दो जोड़े दंपति अपने बच्चों का हाथ पकड़कर उन्हें घूमा रहे होते हैं। रात को यह मैदान, वृक्ष और वातावरण अत्यंत शांत रहता है।" (पृ॰ 42) उपन्यास में कुछ-कुछ जगहों पर कोलकाता महानगर के सौंदर्य चित्रण के साथ दार्जिलिंग के प्राकृतिक सौन्दर्य का तुलनात्मक रूप मिलता है। विंध्या सुब्बा का जुड़ाव नर्सिंग से होने के कारण उनके इस उपन्यास में कोलकाता प्रवास प्रशिक्षण के समय किए गए अनुभवों का भी चित्रण मिलता है। वह लिखती हैं- "इस पेशे में कई चरित्रों से मेरी भेंट हुई। कुछ चरित्र ऐसे हैं जिसको मैं कभी भूल नहीं सकी, कुछ चरित्र मेरे मन में बैठे हैं, कुछ मेरे आँखों में, कुछ चरित्र बार-बार मेरे सामने आते हैं और कुछ मेरी रचनाओं के पन्नों में बंद हो गए हैं।" (पृ. 60) 'अथाह' उपन्यास में उन्होंने अपने इन्हीं अनुभवों बहुत ही व्यवस्थित एवं सहज ढंग से अभिव्यक्त किया है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह उपन्यास उनके इन्हीं अनुभवों का मुकम्मल दस्तावेज़ है।

विंद्या सुब्बा बार-बार अपनी रचनाओं में पलास और कृष्णचूड़ा का ज़िक्र करती हुई दिखाई देती हैं। कारण यह कि उन्हें प्रकृति विशेषकर फूलों और पेड़ों से अत्यंत लगाव है। तराई में खिलने वाला पलास और कृष्णचूड़ा का फूल आज भी इनकी रचनाओं में यत्र-तत्र मिलते हैं। मुख्यतः दो रचनाओं का जिक्र यहाँ पर हुआ है। सन् 2003 में प्रकाशित दूसरे कथा-संग्रह 'हस्पिस' में संकलित कहानी 'पलास फुल्नलाई बसंत पर्खन्दैन' (पलास फूलने के लिए बसंत की प्रतीक्षा नहीं करता) की पृष्ठभूमि भी कोलकाता है। कहानी की पात्र मुनियाँ जिस गली में रहती है, उस गली को रहने के लिए उचित स्थान नहीं माना जाता है। रचनाकार ने उस गली का नामोल्लेख कहानी में कहीं भी नहीं किया है। यह कथा कलकत्ता महानगर के संदर्भ में इस

अर्थ में महत्त्वपूर्ण है कि कथाकार ने फूले हुए पलाश के फूल की सुंदरता को कलकत्ता में आकर ही देखा है, इस फूल का अधिक महत्त्व सरस्वती पूजा के लिए दिखाया गया है। दार्जिलिंग में भी यह विश्वास है कि पंचमी में पलाश के फूल की अपेक्षा उसकी मुरझाई शाखाओं को ही चढ़ाया जाता है। लेकिन कलकत्ता महानगर के महान त्यौहारों में से सरस्वती पूजा के दिन ही इस फूल का अधिक महत्त्व होता है। कथाकार ने अपने लड़के प्रणय के साथ घूमते हुए वर्णन कथा में इस प्रकार किया है- "तराई इलाके इस मौसम में कितने आनंददायक होते हैं। इस पार्क के एक ओर पलाश का एक वट है। दार्जिलिंग में सरस्वती पूजा के समय सूखी हुई डाली को ही पलाश के फूल के रूप में प्रयोग करते हैं लेकिन तराई में आकर ही ज्ञात हुआ कि पलाश का फूल और वट कैसा होता है। विवाह के उपरांत हम तराई के जिस इलाके में रहते थे, उसके आस-पास पलाश के फूल थे। पता ही नहीं चला कि मुझे किसी मौसमी फूल के फूलने के इंतजार की आदत कैसे पड़ गई। बसंत पंचमी से ही बसंत आरंभ हो जाता है और उसी समय बसंत के मौसमी फूल फूलने लगते हैं। इस जगह पर बसंत आगमन से पूर्व ही पलाश के फूलने का दृश्य बनना शुरू हो जाता है, जिसे देखकर पवित्रता की सुखद अनुभूति होती है। पूर्ण रूप से विकसित पलाश कितना रमणीय दिखता है। सरस्वती पूजा के कुछ दिन पहले ही पलाश के वृक्ष से किसी व्यक्ति ने फूल को डाली सहित तोड़ लिया, इस प्रकार का दृश्य देखकर मुझे अत्यंत क्षोभ हुआ। सुना है, सरस्वती पूजा में पलाश के फूल का होना जरूरी है, उसी समय ही उसकी बिक्री भी अधिक होती है।" (पृ. 19) इस कथा में कलकत्ता महानगर को तराई इलाका कहा गया है। कथा के आरंभ के कुछ हिस्से को हम मिसाल के तौर पर देख सकते हैं: "कलकत्ता के एक बाजार में अचानक मुनिया के साथ मुलाक़ात हुई।" (सुब्बा, 2003: 13) एक प्रकार से देखें तो लेखक ने अपनी इस कथा में मुनिया के बचपन के दिनों का चित्रण बहुत ही बारीकी से किया है, पूर्वदीप्ति शैली के प्रयोग से निश्चित रूप से यह कथा अधिक जीवंत एवं प्रभावी हो जाती है। 'कृष्णचूड़ा र पलाश फुल्ने देशबाट' (कृष्णचूड़ा और पलाश फूलने वाले देश से) कथा में भी कलकत्ता में समुद्र के किनारे बस यात्रा करते समय कृष्णचूड़ा फूल को देखकर लेखक बहुत आकर्षित हो जाता है। इस यात्रा में कलकत्ता का वर्णन कहानीकार ने बहुत ही मनोयोग के साथ सुन्दर ढंग से किया है।

कथा, उपन्यास एवं नाटक में सफलतापूर्वक कलम चलाने वाले समीरण छेत्री प्रियदर्शी सामाजिक यथार्थवादी कथाकार के रूप में स्थापित हैं। 'फुटेको मुरली' (1964), 'असफल चित्रकार' (1967), 'अर्को मान्छे', (1986), 'निर्वाणको रात', 'नीलो झींगा' (सन् 1993), 'गैरीगाउँकी चमेली' (सन् 2007) छः कथा संग्रह और दो उपन्यास 'बलिवेदी' और पोखिएको जिंदगी' लिखने वाले समीरण भारतीय नेपाली कथा साहित्य में इन्द्रबहादुर राई के बाद इस पीढ़ी के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। समीरण प्रियदर्शी की कथाभूमि अपने समकालीन कथाकारों से कई मायने में भिन्न है। उन्होंने अपने समाज से कथा भूमि के रूप में ऐसे विषयों को चुना है जिस पर अन्य रचनाकारों का ध्यान सामान्यतया अब तक नहीं गया है। वह अपनी कहानियों में हमेशा कुछ नये और अलग विषयों को लेकर उपस्थित होते हैं। समीरण कलकत्ता को भारतीय

स्वाधीनता आंदोलन के इतिहास के एक महत्त्वपूर्ण अध्याय के रूप में देखते हैं। उन्होंने अपनी ज़्यादातर रचनाओं का ताना-बाना इसी पृष्ठभूमि पर बुना है। इसे इनकी रचनाशीलता के वैशिष्ट्य के रूप में देखा जा सकता है। कलकत्ता एक समय में भारत के स्वाधीनता आंदोलन का मुख्य केंद्र था। पहला कहानी संग्रह 'फुटेको मुरली' के अंतर्गत एक कहानी 'के लिएर आएँ' (क्या लेकर आया) में स्वाधीनता आंदोलन में सुवासचंद्र बोस द्वारा गठित ईकाई 'आजाद हिन्द फौज' की कहानी और गोर्खा सेनानी द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध की लड़ाई के वर्णन पर आधारित है। भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में कलकत्ता महानगर का भी अपना एक सार्थक एवं स्वतंत्र हस्तक्षेप रहा है। उस समय की कलकत्ता की स्थिति का वर्णन लेखक ने जिस प्रकार से किया है, उल्लेखनीय है- "कलकत्ता की गलियों में भूख से बेहाल चीखें थी। फुटपाथ पर लावारिस लाश, अधमरे और तड़प रहे लोगों की भीड़ थी। मोटर, ट्राम बंद थे। रास्तों पर सन्नाटा था। केवल हवाई जहाज की आवाज आ रही थी। शहर के बीच में सिपाहियों के एक समूह ने एक अंग्रेज़ सार्जन पर ईंट से वार करके उसे गिराकर ट्रक से उतरकर भाग गए। स्वराज आंदोलन का एक और दल 'महात्मा' का नारा लगाते हुए आगे बढ़ रहा था। दिन-प्रतिदिन भुखमरी से मरने वालों की संख्या बढ़ ही रही थी। बड़ी-बड़ी बिल्डिंग के गंदे नाले से बहते हुए भात को भी खाने के लिए लोग मजबूर थे। मनुष्य खाने के लिए मर रहे थे, उन्हें देखकर ऐसा लग रहा था जैसे वह खाने के लिए कुत्ते बिल्ली की तरह लड़ रहे हों। अब मनुष्य का हाड़-मांस ही खाने को शेष रह गया था। सियालदह प्लेटफॉर्म पर भी भूख से पीड़ित लोग कराह रहे थे। नींद न आने से भी आँखें नींद का अनुभव कर रही थी। आंदोलन के एक समूह स्वयंसेवक से पूछने के बाद मैंने अपना परिचय दिया कि मैं नेताजी के आजाद हिन्द फौज का सदस्य हूँ। उसके बाद मुझे उठाकर वह अपने गुप्त दफ़्तर ले गए जो बाजार के दूसरी ओर एक कोने में स्थित था।" (पृ. 58-59) कथाकार स्वयं इस कथा में प्रमुख पात्र के रूप में उपस्थित है।

समीरण द्वारा लिखी गई 'नीलो झिंगा' कहानी-संग्रह में संकलित एक कहानी 'कालो झोला' की पृष्ठभूमि भी कलकत्ता महानगर ही है। इसकी कथा भी आजाद हिंद फौज से संबद्ध है। भारत को स्वाधीनता दिलाने में भारतीय नेपाली वीर-वीरांगनाओं के बलिदान के अनलिखे इतिहास एवं भूली हुई उन घटनाओं को सियालदह के ट्राम स्टॉप पर गंदे व फटे कपड़े पहनकर बैठने वाले वह पात्र जो ज्यादातर चिल्लाते रहते हैं, वह दूसरे पात्र लेफ़्टीनेंट कर्नल बुडाथोकी का इस बारे में विस्तृत वर्णन करते हैं। इस कथा में सिर्फ कलकत्ता का ही अधिक वर्णन न होकर हावड़ा, बालीगंज जैसे प्रमुख स्थानों का भी उल्लेख है।

नारी हिंसा पर आधारित समीरण की एक और कहानी 'ब्यारेकपुर लोकल' में कथाकार ने ब्यारेकपुर से सियालदह जाने वाली एक लोकल ट्रेन में हुई एक संवेदनशील घटना का चित्रण किया है। यह कहानी 'गैरीगाउँकी चमेली' संग्रह में संकलित है। कथा का आरंभ उल्लेखनीय है: "मैं ब्यारेकपुर-सियालदह का डेली का पैसेंजर था। उस दिन सियालदह स्टेशन से ट्रेन के छूटने के कुछ देर बाद चार जवान

लड़के मेरे डिब्बे (कम्पार्टमेंट) में घुस गए, उनकी उम्र 25-26 की रही होगी।" (पृ. 40) कथा में वर्णित इस प्रकार की घटनाएँ कलकत्ता जैसे व्यस्त महानगर में आए दिन घटती रहती हैं। उस दिन चलती हुई ट्रेन में यह घटना घटित हुई। डिब्बे में बैठे दो प्रेमी-प्रेमिकाओं पर चारो युवकों ने अन्य यात्रियों को नज़रअंदाज करते हुए लड़की के साथ बदसलूकी करने की कोशिश की। अन्य पचास लोगों ने उस घटना को घटित होते देखकर भी किसी प्रकार का प्रतिकार नहीं किया गया, लेकिन एक महिला ने हिम्मत दिखाते हुए बोला: "क्या वहाँ पर कोई मर्द नहीं है?" आँख के सामने एक मासूम लड़की... ?" उसने फिर बोला- "मुझे प्रतिकार करने वाले एक मर्द की तलाश है।" (पृ. 43) महिला के इस कथन को सुनकर कथाकार के मन में हिम्मत आ जाती है और वह अकेले उस लड़की को चारो युवकों से बचाने में सफल हो जाता है। कथाकार कहता है- "मुझे बदमाशों के साथ अकेले लड़ते हुए देखकर अन्य लोग भी सक्रिय हो गए। सभी लोगों को मेरे साथ खड़े देखकर चारो युवक ट्रेन से कूद गए। मैंने पकड़े गए लड़के को ट्रेन से धक्का (से) दिया। इसी समय प्लेटफॉर्म पर रूकने का सिग्नल दिखाई दिया, ट्रेन ब्यारेकपुर पहुँच गई।" (पृ. 44) इस कहानी के माध्यम से लेखक ने स्वार्थी मनोवृत्ति एवं संकुचित मानसिकता से ग्रस्त समाज के ऐसे चरित्रों को दिखाने का प्रयास किया है जो हत्या, छेड़खानी, बलात्कार जैसी संवेदनशील घटनाओं को सामने घटते हुए देखकर भी विरोध करने में सक्षम होने के बावजूद तमाशबीन एवं मूकदर्शक बने रहते हैं। कहानीकार ने ऐसे छद्म और स्वार्थी मानसिकता वाले व्यक्तियों पर टिप्पणी की है साथ में यह बताने का भी प्रयास किया है कि हमें अपनी चेतनाशून्य वृत्तियों से सजग होकर अभिव्यक्ति के खतरे उठाने की जरूरत है, इससे कहीं न कहीं आए दिन हो रही घटनाओं पर हम अंकुश लगाने में काफी हद तक सफल हो सकते हैं।

भारतीय नेपाली आख्यान साहित्य के मूल स्तंभ के रूप में इन्द्र सुन्दास अपने समय के चर्चित कथाकारों में से एक हैं। 'चामलको महँगी' कथा द्वारा साहित्य में प्रवेश करने वाले कथाकार सुंदास ने अपनी रचनाओं में विशेषतः दार्जिलिंग के परिवेश का चित्रण किया है। इनके द्वारा लिखी गई रचना 'अनुताप' की कथा में कोलकाता में घटित कुछ घटनाओं का वर्णन है। गाँव में पले-बढ़े जयचन मैट्रिक पास करके बी.ए. की पढ़ाई के लिए कोलकाता आता है उसके बाद वहीं से बी.एल. भी करता है। कोलकाता आने से पहले वह तारा से प्रेम करता है और उसी से शादी करने के लिए सोचता है, लेकिन कलकत्ता में आने की बाद उसकी परिस्थिति बदल जाती है। उसकी मुलाकात धनाड्य परिवार के एक साथी की बहन सुलोचना से हो जाती है जो अभी बी. ए. की पढ़ाई कर रही है। कोलकाता में शहरी परिवेश के कारण जयचन तारा को प्रेम तो करता है लेकिन धीरे धीर उसे भूलता जा रहा था, वह उसे अपने से दूर रखता था- "कोलकाता में तारा के लिए जो मन व्याकुल हुआ करता था गाँव में आकर वह सुलोचना के लिए बैचेन होता है।" (पृ॰77) वह सब कुछ भूल जाता है और अंत में सुलोचना से शादी कर लेता है। इससे एक बात पक्की है कि गाँव से पढ़ने आया हुआ युवक जब शहर के वातावरण में एक बार घुल-मिल जाता है तो उसे शहर की आबोहवा से निकाल पाना बहुत ही मुश्किल कार्य है। तारा को धोखा देकर सुलोचना से शादी

करना और दूसरी ओर तारा की एक गरीब लड़के के साथ शादी होना, कोई नहीं टाल सकता है, इस तरह के तमाम उदाहरणों को लेखक ने अपनी रचना में बहुत ही बेबाकी से रेखांकित किया है।

कलकत्ता को केंद्र में रखकर कई रचनाएँ लिखने वाले भारतीय नेपाली आख्यानकार मणि कुमार सुब्बा ने 'टुकी' कविता के माध्यम से सत्तर के दशक में अपनी साहित्यिक यात्रा प्रारम्भ की। इन्होंने अपनी जीवन यात्रा का 33 वर्ष कलकत्ते में नौकरी करके ही व्यतीत किया। इनका पहला कहानी संग्रह 'तुवाँलोभित्रको सम्झना' (1996) में कुल ग्यारह कहानियाँ संकलित हैं। इस संग्रह में संकलित कहानियों की पृष्ठभूमि कलकत्ता महानगर के जन जीवन एवं उनके भोगे हुए यथार्थ पर आधारित है। सन् 2005 में प्रकाशित 'चंद्रबाला' की 18 कहानियों का संग्रह भी कलकत्ता महानगर पर ही आधारित है। इसक संग्रह में संकलित 'महानगरी को रात र आफ्नो माञ्छे को... लाश' कहानी में लेखक ने सियालदह स्टेशन के फुटपाथ पर पड़े एक बेहोश, अधमरे व लावारिश व्यक्ति की बदहाल स्थिति का चित्रण किया है। इस कहानी में सियालदह स्टेशन पर कांचाबहादुर नाम का एक व्यक्ति बदहाल स्थिति में फुटपाथ पर पड़ा हुआ मिलता है। कलकत्ता में स्थापित जन कल्याण संघ के सदस्य रामबहादुर द्वारा इसकी सूचना वहाँ की जनकल्याण संघ संस्था को दी जाती है। इसके पश्चात् संस्था के सदस्यों द्वारा उस लावारिश व्यक्ति का चिकित्सकीय उपचार कराए जाने के दौरान अस्पताल मौत हो जाती है। व्यक्ति के पूरी तरह से अपरिचित होने के बावजूद भी वहाँ की जनकल्याण संघ संस्था द्वारा उस व्यक्ति का विधिवत अंतिम संस्कार किया जाता है। जनकल्याण संस्था के एक सदस्य के रूप में इस घटना में लेखक स्वयं उपस्थित है। इस घटना के माध्यम से सुब्बा ने नेपाली समुदाय के सामंजस्यपूर्ण सौहार्द्र एवं एक दूसरे के प्रति उनके सहयोगात्मक व्यवहार पक्ष को बहुत जीवंत रूप में प्रस्तुत किया है। 2011 में प्रकाशित कहानी संग्रह 'दिभ्रम' के अंतर्गत एक कहानी 'रात यसरी जिउँछ' में लेखक ने कलकत्ता की हर्कट्ठा गली के वैश्यालय को केंन्द्र में रखा है। कथा का प्रारम्भ इस प्रकार है- "प्रचंड गर्मी से बेहाल वातावरण। इसमें लोगों की खचाखच भीड़। चारो तरफ रिक्शा, ट्राम और बसों से भरी हुई सड़क। वाहनों की आवाजाही से वातावरण कोलाहलमय हो गया था। यह एक व्यस्ततम शहर है। यहाँ उच्च तबके के लोग एयर कंडीशन में रात्रि व्यतीत करते हैं।.... रजनीगंधा, बेलफूल, गजरा, झुमका आदि का क्रय-विक्रय चल रहा है। होटल-रेस्टोरेन्ट में ग्राहकों की आवाजाही और मौजमस्ती जारी है।" (पृ. 1) इस वर्णन से एक विशेष प्रकार के परिवेश का भान होता है।

भारतीय नेपाली साहित्य के आख्यान विधा में डुवर्स क्षेत्र के प्रतिनिधि साहित्यकार बद्रीनारायण प्रधान का नाम बड़े ही आदर से लिया जाता है। मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित प्रधान ने अपने लेखन में प्रगतिवादी धारा को आत्मसात किया है। भारतीय बाल साहित्य में भी इन्होंने अपनी महत्त्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज की है। इनकी एक कहानी 'ड्राइभर तेजवीरको कथा' में कलकत्ता का चित्रण देखने को मिलता है। अल्पशिक्षित तेजवीर गाँव के परिवेश में ड्राइवरी सीखने के बाद कलकत्ता महानगर में ड्राइवरी करता है।

कलकत्ता को 'क्यालकाटा' उच्चारण करने वाला तेजवीर ड्राइवरी की नौकरी मिलने के बाद गाँव की पहले से पसंद की हुई एक लड़की इंद्रेणी से विवाह करके उसे कलकत्ता ले जाता है, जिसने इसके पहले कभी सिलीगुड़ी तक नहीं देखा था। जिसका वर्णन इस प्रकार है: "कलकत्ता की भीड़, गाड़ियों की आवाज, लोगों की खचाखच भीड़ को देखकर इंद्रेणी ने समझा कि मेला लगा है। पति का हाथ पकड़ते हुए इंद्रेणी अपने पति से पूछती है- क्या यही है आपका क्यालक्याटा?" (पृ.61) उसने कलकत्ता की जीवन-शैली को बहुत जल्दी ही समझ लिया। उसके पति ने उसे कलकत्ता के प्रमुख स्थलों जैसे चिड़ियाघर, बोटनिकल गार्डन, हावड़ा ब्रिज, विडला प्लानटोरियम, भिक्टोरिया मेमोरियल एवं म्यूजियम आदि का भ्रमण कराया। अपनी जन्मभूमि को भूलकर वे दोनों अब कलकत्ता के माहौल में रच-बस गए। वैवाहिक जीवन सुखमय व्यतीत हो रहा था, इसी समय गाड़ी मालिक की कुदृष्टि तेजवीर की सुन्दर और हृष्टपुष्ट पत्नी पर पड़ जाती है, तेजवीर को इसका पता नहीं चल पाता है। घर में पत्नी के मायके गए हुए का बहाना बनाकर गाड़ी मालिक द्वारा इंद्रेणी को अपने घर में खाना बनाने के बुलावे पर तेजवीर उसे समझाकर भेज देता है। कुछ दिन अच्छी तरह बीतने के बाद मालिक उसके अकेले होने का फायदा उठाकर इंद्रेणी की इज्जत पर हाथ डाल देता है। इस कुकर्म के विषय में इंद्रेणी घर आकर अपने पति को सब कुछ बता देती है। मौका देखकर तेजवीर गाड़ी मालिक से बदला लेने को सोचता है लेकिन कुछ दिन तक वह इस घटना पर कुछ प्रतिकार नहीं करता। कुछ दिन बीतने पर वह योजनाबद्ध तरीके से मालिक से बदला लेने में सफल हो जाता है। इस से पहले वह इंद्रेणी को ट्रेन से दार्जिलिंग भेजकर वह भी नौकरी छोड़कर दार्जिलिंग चला जाता है। यहीं पर कहानी खत्म हो जाती है।

भारतीय नेपाली साहित्य के समकालीन लेखन में कालुसिंह रनपहेंली एक चर्चित कवि, कहानीकार एवं गीतकार के रूप में उल्लेखनीय नाम है। 2011 में प्रकाशित कहानी संग्रह 'प्रश्नचिन्ह' में संकलित एक कहानी 'धमिलिंदै गइरहेको एउटा साँझ' में कलकत्ता महानगर के सुप्रसिद्ध स्थल विक्टोरिया मेमोरियल का सजीव चित्रण देखने को मिलता है। यह कहानी दो पात्रों की आधुनिक विचारधारा पर केन्द्रित है जिसमें दो अपरिचित पात्रों द्वारा किया गया संवाद कथा में इस प्रकार से है:

"कलकत्ता महानगरी।

विक्टोरिया मेमोरियल के सामने स्थित बाग-बगीचे का दृश्य एकाएक जीवंत होकर आँखों में समा जाता है। विक्टोरिया मेमोरियल के ऊपर जलती हुई चमकती बत्ती।

"एक्सक्यूज मी!"

"यस प्लीज!"

"आप मेरे साथ चल सकते हैं?"

"ओके... नो प्रोब्लेम" (पृ.77)

नेपाली आख्यान के ज्यादातर पात्र उच्च शिक्षा के निमित्त ही कोलकाता आए। जैसे- रनपहेंली के उक्त कथा का पात्र दिपेस कलकत्ता में मेडिकल की पढ़ाई करने के लिए आया। पात्र का वास्तविक नाम दिपेस और विदिषा है लेकिन दोनों ने विक्टोरिया मेमोरियल की पहली मुलाक़ात में ही झूठ बोलकर अपना नाम दिपेस ने गगन और विदिषा ने सुस्मिता एक दूसरे को बताया। सुस्मिता नाम की अपरिचित लड़की ने पहली मुलाक़ात में ही गगन के साथ प्रेम के नाम पर कुछ भी करने को तैयार हो जाती है। इस प्रकार का व्यवहार देखकर गगन के मन में सुस्मिता के प्रति इस प्रकार का संदेह होता है कि सुस्मिता को किसी व्यक्ति ने उस शहर में छोड़ दिया हो व बेच दिया हो। इस प्रकार की दलदल स्थिति से सुस्मिता को बचाने के लिए दिपेस विक्टोरिया मेमोरियल प्रतिदिन जाता है लेकिन उसकी मुलाक़ात सुस्मिता से नहीं होती है। इस बीच (अंत में) दिपेस की मँगनी तय हो जाती है और वह इसके निमित्त जिस घर में जाता है उस समय गगन की मुलाक़ात सुस्मिता से हो जाती है। यहीं दोनों को एक दूसरे के असली नाम का पता चलता है। इस तरह विक्टोरिया मेमोरियल में दिखे प्रेममय दृश्य में कृत्रिम प्रेम का ढोंग रचकर शारीरिक संबंध स्थापित करने में कोई असहजता महसूस न होने जैसी घटना का इस कथा में वर्णन किया गया है।

सिक्किम में नेपाली भाषा एवं साहित्य को विकसित करने में रश्मिप्रसाद आले की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। सन् 1947 में गंगटोक में गठित 'नेपाली साहित्य सम्पर्क समिति' के संस्थापक सदस्य आले ने सन् 1958 में प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका 'सुनाखरी' का सम्पादन किया है। लेख, निबंध एवं कथा आदि में कलम चलाने वाले आले की एक कहानी 'भूईचालो' भारतीय नेपाली कथा विशेषांक में संकलित है।

सभी रचनाकारों की तरह ही आले ने भी अपने कथा साहित्य में कलकत्ता के आकर्षण को महसूस किया है। उन्होंने अपनी कहानी 'भूईचालो' में कलकत्ता महानगर को देखने की इच्छा मात्र नहीं बल्कि उसे अपने सौभाग्य के रूप में स्वीकार किया है। सिक्किम से अपने ही एक मित्र के साथ कलकत्ता पहुँचे हुए आले ने कलकत्ता का चित्रण करते हुए लिखा है- "कलकत्ता में भी चिड़ियाघर, जादूघर, विक्टोरिया मेमोरियल, हावड़ा का पुल, इत्यादि के भ्रमण के साथ ही घर से बच्चों एवं पत्नी द्वारा भेजी गई चीजों की लंबी सूची में लिखे सामनों को खरीदने के लिए वह चौरंगी, डलहाउजी, धर्मताला और बड़ा बाजार घूमते-घूमते पूरी तरह थक गया है। भीड़ और पाकेटमार के डर से वह त्रस्त है। होटल का किराया चुकाने में असमर्थ होने की फिक्र के साथ-साथ उसे अपने फटे हुए झोले को पाकेटमारों से बचाने की चिंता है।" (पृ. 546) तीन दिन तक कलकत्ता में रहने के बाद वह जब सिक्किम घर लौटने के लिए सियालदह स्टेशन से रेल में चढ़े तो सोने के बाद रेल के हिलने की स्थिति से लेखक को भूकंप का अनुभव हुआ। इस भूकंप ने पूरी तबाही मचा दी, लेकिन नींद खुलने पर लेखक को आभास हुआ कि वह स्वप्न देख रहा था।

भारतीय नेपाली साहित्य के चर्चित लेखक नुरनराई 'जुदू' ने अपने कहानी संग्रह 'ठेलमठेलभित्रको बोध' में अपने समय की तत्कालीन विसंगतिबोध एवं चुनौतियों को उद्घाटित किया है। इस संग्रह की चर्चित

कहानी 'मैले नौकरी छाड़ने निर्णय लिएँ' जातीय अस्मिता पर आधारित है। कहानी का मुख्य पात्र कलकत्ता के अंग्रेजी स्कूल का एक अध्यापक है। सामाजिक भेदभाव एवं जातीय दंश से त्रस्त होकर वह अंत में नौकरी छोड़ने का निर्णय ले लेता है। इस कहानी में लेखक ने कलकत्ता के तत्कालीन समाज में जाति के नाम पर हो रहे भेदभाव, हिंसा एवं मानसिक प्रताड़ना को दिखाने का प्रयास किया है।

जीवन नामदुंग द्वारा संकलित एवं संपादित पुस्तक 'गाब्रियल रानाका कथाहरू' संग्रह में नेपाली समाज के जनजीवन के प्रत्येक पहलुओं को उजागर किया गया है। इस संग्रह में संकलित 'कलकत्ता शहरभित्र जन्मेको एउटा कथा' में नेपाली समाज की जीवंत संस्कृति को रेखांकित किया गया है। कहानी का मुख्य पात्र कांछा कलकत्ता में स्थित हजारीरोड के किनारे एक पंजाबी रेस्टोरेन्ट में कुक के रूप में काम करता है। लेखक ने इस कहानी में कांछा को एक सहज, मिलनसार एवं हँसमुख पात्र के रूप में चित्रित किया है। इस कहानी में लेखक ने कलकत्ता में भिन्न-भिन्न जगहों जैसे- भवानीपुर, खिदिरपुर एवं पार्क सर्कस आदि स्थानों पर रहने वाले नेपाली समुदाय का विवरण प्रस्तुत करते हुए नेपाली समाज की मिश्रित संस्कृति को भी रेखांकित किया है। दीवाली पर्व के समय की नेपाली संस्कृति का सजीव चित्रण भी कहानी में प्रमुखता से उद्घाटित हुआ है। कलकत्ता में नेपाली समाज को एकजुट करने की दिशा में भी इस कहानी का सार्थक हस्तक्षेप देखने को मिलता है।

भारतीय नेपाली साहित्य के चार उपन्यासों एवं कहानियों में कलकत्ता में अलग–अलग समय में घटित घटनाओं, समाज की छोटी-बड़ी समस्याओं एवं स्थलों को रचनाकारों ने जिस रूप में महसूस किया, उसका जीवंत चित्रण उनकी रचनाओं में देखने को मिलता है। आधुनिक नेपाली साहित्य में कलकत्ता का वर्णन विशेष रूप से होना निश्चित रूप से महत्त्वपूर्ण है। एक प्रकार से देखें तो आधुनिक नेपाली साहित्य के लिए यह प्रसंग गर्व का विषय है। कलकत्ता का वर्णन करने का मतलब वहाँ की भाषा, जीवन-शैली एवं संस्कृति को साहित्य में लाना है। नेपाली साहित्य में इसके मौलिक स्वरूप का चित्रण प्रमुखता से दिखाई देता है। आज का कोलकाता, वह कलकत्ता नहीं है। कलकत्ता ने आम जनमानस को संघर्ष करना सिखाया है। इस प्रकार के चित्रण पुरानी चीजों को ताजा कर देते हैं। अभी वह कलकत्ता नहीं है जो धनमती के सिनेमा स्वप्न में चित्रित है। परिवर्तित कलकत्ता को नजदीक से देखना है तो आज के साहित्य को पढ़ना जरूरी है। साहित्य में चित्रित विभिन्नों पात्रों ने कलकत्ता की संवेदना एवं संघर्ष को जिस प्रकार से महसूस किया है, उसकी विस्तृत चर्चा प्रस्तुत प्रपत्र में की गई है। समय की गति के अनुरूप भौगोलिक एवं सामाजिक संरचना, व्यक्ति की सोच, रहन-सहन एवं जीवन शैली आदि सब में बदलाव हुआ है। कल का कलकत्ता आज कई दृष्टियों से अत्यंत रमणीय एवं विकसित तो जरूर हुआ किन्तु कुछ दृष्टियों से इसने अपनी कृत्रिमता, पारंपरिक ढांचे एवं मौलिकता को भी खोया है। फिर भी कल और आज का कलकत्ता, साहित्य में उसी रूप में जीवित है जैसा इसे पाया गया, देखा गया और महसूस किया गया है।

कोलकाता से विशेषकर दार्जिलिङ, तराई-डुवर्स एवं सिक्किम ने बहुत कुछ सीखा और ग्रहण किया है। साहित्य, कला और संगीत में समृद्ध कलकत्ता ने जीवन के विविध रंगों में घुलना-मिलना सिखाया है। एक प्रकार से कहें तो अनेकता में एकता के संधान की मूल अवधारणा को हमने कोलकाता से ही ग्रहण किया है। कलकत्ता महानगर कभी सोता नहीं, यह कहावत भारतीय नेपाली आख्यानों के द्वारा पुष्ट हो जाती है। कलकत्ता को जैसी सांस्कृतिक राजधानी माना जाता है, नेपाली आख्यानों में इसका चित्रण विस्तृत रूप में हुआ है। यहाँ के साहित्यिक जीवन का मुख्य आधार सांस्कृतिक आदान-प्रदान है। यहाँ की बोली जाने वाली भाषा, समाज, साहित्य एवं संस्कृति ने नेपाली साहित्य को समृद्ध करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय नेपाली कथा साहित्य में कोलकाता का प्रतिनिधित्व एवं उसकी भूमिका बहुत ही अहम है। निश्चित रूप से कोलकाता की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों को समझने के लिए भारतीय नेपाली साहित्य को एक प्रामाणिक दस्तावेज़ के रूप में देखा जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

अधिकारी, हेमाङ्गराज, (संपा.). (2014). साठी वर्षका भाषिक चर्चा, घनश्याम नेपाल र विष्ट, 'भारतमा नेपाली भाषाको मानकीकरणमा व्याकरण परंपरा', काठमाडौः नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान.

छेत्री, समीरण. (1964). फुटेको मुरली, पं. परमानन्द शर्मा.दार्जिलिंगः चौक बजार.

--------. (1993). नीलो झिंगा, सिक्किमः गान्तोक, बीरबल सुब्बा, सिक्किम सरकार.

--------. (2007). गैरीगाउँकी चमेली, गान्तोकः देउराली, झिल्का प्रकाशन.

प्रधान, कुमार. (2010). पहिलो पहर (द्वितीय संस्करण) ललितपुरः साझा प्रकाशन.

नामदुङ् जीवन, (संकलन तथा संपादन). गाब्रियल रानाका कथाहरू, दार्जिलिंग : साझा प्रकाशन.

नेपाल, घनश्याम (संपा.). (1989). कथा सागर, इन्द्र सुन्दास, 'अनुताप', गान्तोक, जनपक्ष प्रकाशन.

'रसिक, अच्छा राई, (2005). पाँचौं संस्क. लगन, गान्तोक: जनपक्ष प्रकाशन.

राई, नुरन, ठेलमठेलभित्रकोबोध, दार्जिलिंग: श्याम प्रकाशन.

लोहागण, ध्रुव. (2001). रजनीगंधा, सोरक, दक्षिण सिक्किम: लक्ष्मी प्रकाशन.

सिंह, रूपनारायण. (1936). भ्रमर, गांतोक: जनपक्ष प्रकाशन.

सुब्बा, मणी कुमार. (2011). दिभ्रम, दार्जिलिंग: पाइका प्रकाशन.

……., (2005). चंद्रबाला, दार्जीलिङः पाइका प्रकाशन.

सुब्बा, विंद्या. (1999). अथाह, दार्जीलिङः हांगखिम परिवारको पक्षबाट.

-------- (2003). हस्पिस, दार्जीलिङः बसुधा.

-------- (संपा.). (2011). विविध आयाममा कृष्णसिंह मोक्तान, दार्जीलिङः मन्दरा स्मृति प्रतिष्ठान.

हाङ्खिम, प्रकाश. (2012). सुनपसिना. लाङ्कु: थापा पब्लिकेशन.

(परिचय : लेखिका सिक्किम विश्वविद्यालय के नेपाली विभाग में एसोशिएट प्रोफ़ेसर पद पर कार्यरत हैं। डॉ. कविता लामा की नेपाली साहित्य एवं बाल-विमर्श पर केंद्रित कई पुस्तकें प्रकाशित हैं। यह लेख मूलतः नेपाली भाषा में लिखा गया है। इस लेख के हिंदी रूपांतरण में डॉ. प्रदीप त्रिपाठी का सहयोग रहा है।)